पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

हम जीवन में सफर करते हैं, या जीवन हमारे अंदर सफर करता है? यह सोचनीय प्रश्न है। कभी या तो दोनों ही सत्य हो सकते हैं, या एक भी नहीं। अगर हम कहें, हम यात्री हैं या दर्शक हैं या दोनों ही हैं? तो आप कहेंगे कि कभी आप यात्री हैं, कभी दर्शक हैं, इससे एक बात तो सिद्ध है कि दुनिया में कुछ भी सीधी रेखा में नहीं है।

पूरे विश्व को ध्यान से देखिए, कहीं भी आपको इस दुनिया में कुछ भी सीधा नहीं मिलेगा। हर किसी चीज़ में एक घुमाव ज़रूर होगा। कहते भी हैं, भाई! यह संसार गोल है, अर्थात् उसका दूसरा छोर पाना बहुत ही मुश्किल है। आप, हम या कोई और उस छोर को पाने की कोशिश में लगे रहते हैं। चीज़ें जैसी हैं, वैसे ही उसे स्वीकार करना इतना आसान नहीं है। आप और हम सभी चीज़ों को, लोगों को नियमित करने में लगे रहते हैं, उसे बदलना चाहते हैं, लेकिन हमारा मन कहता है कि संसार चक्रवत या गोल-गोल ही कार्य करता है। आसान शब्दों में कहें तो कह सकते हैं, एक घटना दूसरे घटना से जुड़ी है, ना कि कोई सीधी रेखा में है।

उदाहरण के लिए जैसे दिन-रात, महीने-वर्ष आदि का एक साइकल या चक्र चलता रहता है, वैसे ही हमारी भावनाएं, कर्म और परिणाम के आधार से विचारों का जन्म होता ही रहता है। आप सोचिए ज़रा, सबकुछ हमारी तरफ से चल रहा है। लेकिन ज़िन्दगी की शुरुआत में हमें क्या सिखाया जाता है, कि सब कुछ एक सीधी रेखा के साथ, अर्थात् सीधा चलता है, लेकिन ऐसा नहीं है। आप देखो, जो कभी भूतकाल में था, वही आज भविष्य में है, जो भविष्य में है, वही वर्तमान बन चुका है।

हालांकि वर्तमान में दोनों का एक केन्द्रबिन्दु हो सकता है, कि जो हमने कभी का कभी सोचा है, वही भूत है, वही भविष्य है, यह नयी बात नहीं है, यह आपको भी पता है। अब अपने ही जीवन को आप देखो... या तो आपके भूतकाल की घटनायें आपको खींचती हैं, या भविष्य की चिंता खींचती है। सबकुछ बदल रहा है, लेकिन एक सीधी रेखा में कुछ भी नहीं, सब गोल मोल ही है।

फिर हमें करना क्या है? कैसे समझाएं इस मन को! जो कुछ भी घट रहा है, उसे कम या ज़्यादा करना हमारे हाथ में है, किसी भी बात को गम्भीरता से लेने की शायद ज़रूरत नहीं है। आप देखिए... आपके जीवन में जो भी दुर्घटनाएं हुईं, ऊपर नीचे हुआ, वह आज बिल्कुल भी याद नहीं है, यदि याद भी है, तो उनकी स्मृति को हमने स्वीकार तो कर ही लिया है। जैसे सागर में तरंगें उठती हैं, बाद में उसी में समा जाती हैं, वैसे ही कोई बात मन में आती जाती रहती है, तो उनसे इतना परेशान होना, माना चक्र को स्वीकार ना करना। हर एक घटना को विशाल रूप में देखने के लिए अपने मन को खुला रखना पड़ेगा।

उदाहरण के लिए... आसमान है, उसे देखने के लिए बाहर निकलना पड़ता है, वैसे ही मन के विचारों की तरंगों का आसमान बहुत ही बड़ा है, उसे देखने के लिए थोड़ा घटना को या बात को चक्रवतया देखें। तो कभी भी मन खराब नहीं होगा।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-12 (2017-2018)

1	2	3	■	4		5	■	■	6
■	7			■	■	8	9	■	
10	■		■	11	■	12		13	■
14		■	15		■		■	16	17
	■	18	■	■	19	■	■	■	
	■	20		■		■	21	22	■
23	24		■	■	■	25			26
■		■	27	■	28		■	■	
29	■	■		■	30		31		■
32				■		■		■	■

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

2. मातेश्वरी जगदम्बा का अव्यक्त मास (2)
3. असुर, दानव, दैत्य (3)
5. प्रसिद्ध, नामवाला (4)
6. ....होकर ड्रामा की हर सीन देखनी है, न्यारा (2)
9. तल, परत (2)
10. मैं....हूँ बाबा मुझको तेरा प्यार मिला (5)
11. तुम्हारी आत्मा.... पवित्र बन रही है लेकिन शरीर तो त-मोप्रधान तत्वों से बना है (2)
13. किस समय, कभी नहीं (2)
17. उद्देश्य, निशान (2)
18. जगत, संसार, जहान (3)
19. वस्तु, सामान (2)
21. तकदीर, नसीब (2)
22. लत, बुरी आदत (2)
24. कालों का.... महाकाल, समय (2)
26. लकीर, लाइन, कतार (2)
27. छल, धोखा (3)
28. कमी, न्युनता (3)
29. सहेली, मित्र (2)
31. हुनर, निजी विशेषता, निपुणता (2)

बायें से दायें

1. इनाम, पुरस्कार (3)
4. ओना, फिकर (3)
7. तारा, सितारा, मोती (3)
8. मित्र, दोस्त, सखा (2)
12. खरीदार, क्रेता (3)
14. संशय, अनिश्चय, दुविधा (2)
15. जीवन एक... है, क्रीड़ा (2)
16. ताकत, शक्ति (2)
20. ....की बेला में, रात (2)
21. बाप से मीठी-मीठी बातें करो तो शरीर का....खत्म हो जायेगा (2)
23. उधार, बाकी, कर्ज, शेष (3)
25. तकदीरवान, नसीबवाला (4)
28. हाथ, हस्त (2)
30. बाबा का वरदानी नाम, बाप टीचर और.... तीनों ही सम्बन्ध से बाबा को याद करना है (4)
32. तुम बच्चों को आपस में बहुत प्यार से रहना है.... नहीं करनी है, झगड़ा (4)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन।

भुवनेश्वर-ओडिशा। उच्च शिक्षा मंत्री अनंत चरण नायक को माउण्ट आबू में हाने वाले कॉन्फ्रेन्स का निमंत्रण देते हुए ब्र.कु. मन्जू, ब्र.कु. विजय, ब्र.कु. निर्मल तथा अन्य।

किशनगढ़-राज.। महाशिवरात्रि के कार्यक्रम में कांग्रेस जिलाध्यक्ष नाथूराम सिनोदिया को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कमलेश दीदी।

जपला-झारखण्ड। महाशिवरात्रि के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए बायें से नगर पंचायत अध्यक्षा बबिता देवी, एस.डी.ओ. कुंदन कुमार, पूर्व कर्नल संजय कुमार सिंह, ब्र.कु. राजमती, ब्र.कु. बबिता, ब्र.कु. रजनी तथा अन्य।

हैप्पी बर्थडे
सभी भाईयो
हार्दिक शुभ

भादरा-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा अजितपुरा गांव में आयोजित महाशिवरात्रि महोत्सव में केक काटते हुए सरपंच शुभकरण राठोड़, ब्र.कु. चन्द्रकला तथा झाँकी के प्रतिभागी बच्चे।

परीक्षित नगर-मेरठ(उ.प्र.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर शिव संदेश शांति यात्रा का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए एस.एच.ओ. धर्मेन्द्र सिंह, चेयरमैन अमित मोहन गुप्ता, ब्लॉक प्रमुख के.पी. सिंह, ब्र.कु. चन्द्र बहन, ब्र.कु. पवन तथा अन्य।

त्रिमूर्ती शिव जयन्ती के महोत्सव पर
आपका हार्दिक स्वा

जालोर-राज.। त्रिमूर्ति शिव जयंती के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करने के पश्चात् ग्रेनाईट एसोसिएशन के अध्यक्ष लाल सिंह धानपुर, नगर परिषद उपसभापति मन्जू सोलंकी, भारत विकास परिषद के प्रान्तीय उपाध्यक्ष पदमा राम जी चौधरी तथा अन्य अतिथियों को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रन्जू बहन।